अध्ययन 9

किस बात के लिये इन्तजार करें ?

परीक्षा का साम्हना किस प्रकार करें :

हम इस प्रवृति के साथ जन्म लिए हैं कि वास्तव में हम मैदान में लुढ़कने वाले गेन्द की तरह हैं । बाइबल बताती है कि इसके लिये हमारा पुराना स्वभाव जिम्मेदार है । परिणाम स्वरूप हम हमेशा परमेश्वर के वचन द्वारा ठहराया हुआ सीधी दौड़ से अलग हट जाते हैं । जब हम नया जन्म पा लेते हैं तो परमेश्वर की सन्तान बन जाते हैं, इस समय भी हम पाप कर सकते हैं परन्तु हम आगे को ऐसा नहीं करते हम स्वतंत्र है उन बातों को सीखना जो कुछ परमेश्वर हम से करना चाहता है न कि हम गड़बड़ी ला दें जैसे हम ने पहले समय में किया । एक मसीही विश्वासी के लिये आवश्यक नहीं है कि पाप करे क्योंकि परमेश्वर ने इसका विरोध करने के लिए पवित्र आत्मा का सामर्थ दिया है ।

"तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर है और परमेश्वर सच्चा है : वह तुम्हें सामर्थ से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा बरन परीक्षा के साथ निकास भी करेगा कि तुम सह सको ।"

(1 कुरिन्थियों 10:13)

हमें अपने को किसी परीक्षा के हवाले करने की आवश्यकता नहीं है कि हम पाप करें क्योंकि परमेश्वर हमारी सहायता करेगा तथा सामर्थ देगा ताकि हम इसका साम्हना कर विजय प्राप्त कर सकें यदि हम उसकी ओर ताकेंगे।

यदि हम पाप करते हैं तो क्या होगा ?

परीक्षा में पड़ना पाप नहीं है । यीशु की भी परीक्षा हुई थी । (देखें मत्ती

4:1–11) यदि हम असफल हो जाते हैं तो यीशु मसीह में हमारे लिये पाप क्षमा है । जो कुछ हमें करना है वह है परमेश्वर के साम्हने अपने पापों को स्वीकार करना कि हम ने उसको हर पहलु में खिन्न कर दिया है तथा उसे क्षमा मांगे और क्षमा करेगा । जो भी हम ने अपराध किया है वह सब परमेश्वर भूल जाएगा । यीशु को दण्ड दिया गया, न्याय किया गया तथा सब पापों के लिये दोषी ठहराया गया, इसलिये यदि हम परमेश्वर से क्षमा मांगते है, हम उस पाप के विषय भूल जाएंगे और जीवन में आगे बढ़ते जाएंगे पवित्र और निर्दोषि होकर परमेश्वर की उपस्थिति में । (1 यूहन्ना 1:9)

यीशु मसीह हमारी सहायता कर सकता है

"क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सके, बरन वह सब बातों में हमारी नाई परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला।" (इब्रानियों 4:15)

यीशु मसीह ने ऐसी परीक्षाओं का साम्हना किया जैसे आज हम करतें हैं, परन्तु उस ने उनका विरोध किया और एक बार भी पाप नहीं किया । इस कार्य को करने में वह हमारी सहायता कर सकता है यदि हम अपना जीवन उस को समर्पित कर देते हैं ।

वही काटोगे जो बोते हो

परमेश्वर के राज्य में एक सिद्धान्त है जो सर्व–व्यापी है । आप जो कुछ बोते हैं वही काटते हैं । (देखें लूका 6:38) यदि आप पाप का जीवन तथा परमेश्वर की आज्ञा का उल्लघंन करने वाला जीवन व्यतीत करते हैं तो आप दुःख, अपने स्वार्थ की इच्छा करने वाला जीवन तथा असफलता का कटनी काटोगे । परन्तु यदि आप ऐसा जीवन व्यतीत करते हैं जो परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला है तो आप जीवन में सफल होंगे इस जगत में । इसका अर्थ है हमें ऐसा जीवन व्यतीत करना है जिस से परमेश्वर प्रसन्न हो न कि अपनी इच्छा के अनुसार । परमेश्वर हमारी सहायता करेगा हरेक पाप तथा परीक्षाओं से यदि हम उस को ऐसा

करने देंगे । हमारा स्वर्ग का प्रतिफल हमारे कामों पर आधरित है जिसे हम अभी करते हैं। (1 कुरिन्थियों 3:11–15)

शैतान कौन है ?

शैतान या दुष्ट, परमेश्वर का गिराया हुआ स्वर्गदूत है जिसने अभिमान करके परमेश्वर के विरोध विद्रोह किया । वह हमारा बैरी है क्योंकि जो कुछ परमेश्वर का है उसके विरोध में रहता है ।

"सचेत हो, और जागते रहो, क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह की नाई इस खोज में रहता है कि किस को फाड़ खाएं । विश्वास में वृढ़ होकर उसका साम्हना करो ।" (1 पतरस 5:8–9)

बाइबल में परमेश्वर हमें दिखाता है कि हमें सावधान रहना है कही ऐसा न हो कि शैतान को पैर रखने का आश्रय मिले हमारे जीवनों में (देखें इफिसियों 4:27) शैतान शिष्ट मनुष्य नहीं है । वह हमारा विनाश चाहता है तथा हमारी कमजोरियों को खोजते रहता है ताकि समय पाते ही अपना सब से बुरा प्रभाव हमारे जीवन में डाल दे। हमें अपने आप को परमेश्वर के आधीन कर लेने की आवश्यकता है उसका साम्हना करें तो वह हमारे पास से भाग निकलेगा । (देखें । यूहन्ना 3:8)

"जो कोई पाप करता है वह शैतान की ओर से है, क्योंकि शैतान आरम्भ ही से पाप करता आया है परमेश्वर का पुत्र इसलिये प्रगट हुआ कि शैतान के कामों को नाश करें ।" (1 यूहन्ना 3:8)

"उसने प्रधानताओं और अधिकारों को अपने ऊपर से उतार कर उन का खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया और क्रुस के कारण उन पर जय–जय कार की घ्वनि हुई ।" (कुलुस्सियों 2:15)

शैतान वास्तविक है और वह आप का विरोधी है। उस के सब से अधिक प्रभावी हथियारों में से एक है निराशा इसलिये हम सचेत और जागते रहें। (देखें 2 कुरिन्थियों 2:11) यीशु मसीह को स्मरण करो जिस ने शैतान और उसके सब सामर्थ पर विजय प्राप्त की क्रुस पर । हम यीशु

मसीह में हैं (देखें कुलुस्सियों 3:3) और इसलिये हमको भी अधिकार दिया गया है शैतान और अशुद्ध आत्माओं के ऊपर में । यदि हम परमेश्वर के साम्हने पवित्र हदय के साथ शैतान का साम्हना करें उस अधिकार के साथ जो यीशु के नाम में है तो शैतान भाग खड़ा होगा।

"पर तुम एक चुना हुआ वंश और राज–पदधारी याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और परमेश्वर की निज प्रजा हो, इसलिये कि जिस ने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करों।" (1 पतरस 2:9)

प्रश्न तथा सकेंत :–

1. क्या आप सोचते हैं कि एक मसीही पाप करना बन्द कर देता है और धार्मिक जीवन बिताना आरम्भ कर देता है बिना कुछ किए अपने विषय में ? (कुलुस्सियों 3:5–14, फिलिप्पियों 2:12–15, 1 यूहन्ना 1:8–2:2)
2. क्या परमेश्वर कभी हमारी परीक्षा लेता है ? (याकुब 1:13–15)
3. यदि यीशु मसीह स्वर्ग में है तो शैतान अभी कहां पर है ? (इफिसियों 1:19–23)
4. क्या शैतान हमारे सोच विचार को प्रभावित करने की कोशिश करेगा ? (2 कुरिन्थियों 4:4, 11:3–14)
5. अपने प्रोत्साहन के लिये निम्नालिखित पदों का अध्ययन करें: (फिलिप्पियों 4:13, याकुब 1:2–4, 1 यूहन्ना 4:4)

प्रार्थना :–

सर्वशक्तिमान परमेश्वर मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ कि तू ने मेरे पाप पूर्ण जीवन के तरफ के स्वाभाविक झुकाव को दूर कर दिया है। मैं जानता हूँ कि परीक्षा मेरे पास आएगी पाप की ओर प्रेरित करने के लिये । परन्तु मैं प्रार्थना करता हूँ कि मुझे सामर्थ प्रदान कर ताकि मैं परीक्षाओं का साम्हना कर सकूं। मैं तेरे पीछे चलना चाहता हूँ तथा तुझे प्रसन्न करना

चाहता हूँ। मैं यह भी जानता हूँ कि शैतान पूरी कोशिश करेगा ताकि मैं असफल हो जाऊ। मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ कि तू ने शैतान और उसके कार्यों पर यीशु मसीह मे सम्पूर्ण विजय प्राप्त की है। मैं फिर से अपने आप को तेरे हाथों में सौंपता हूँ। मैं जानता हूँ ऐसा करने के बाद शैतान मेरे पास से भाग निकलेगा जब मैं उसका साम्हना करुंगा। मैं यह प्रार्थना यीशु के सामर्थी नाम से करता हूँ। आमीन।